हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक 'सारंगी' बुनियादी स्तर के शिक्षक की भूमिका

रमेश कुमार*
अशोक कुमार**

शिक्षा एक जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है, जो बच्चों के सार्वभौमिक विकास में सहायक होती है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने भी इस बात का समर्थन किया और शिक्षा में गुणवत्ता के सुझाव दिए हैं। कोठारी कमीशन (1964–66) की रिपोर्ट के अनुसार "किसी देश का निर्माण विद्यालय के कक्षा-कक्ष में हो रहा है" इस कथन से स्पष्ट होता है कि किसी देश के लिए शिक्षा का क्या महत्व होता है। अरस्तू ने तो यहाँ तक कहा है कि "जिस तरह जीवित व्यक्ति, मृत व्यक्ति से श्रेष्ठ होता है, उसी प्रकार शिक्षित व्यक्ति, अशिक्षित व्यक्ति से श्रेष्ठ होता है।" अतः शिक्षा एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो बच्चों को वास्तविक जीवन के लिए तैयार करती है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का संचालन सुचारु रूप से होना अनिवार्य है। शिक्षण प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के द्वारा शिक्षण-अधिगम सामग्री और शिक्षण अधिगम विधियों के बारे में कई महत्वपूर्ण संस्तुतियाँ प्रस्तुत की गई हैं। इन्हीं को ध्यान में रखकर रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा शिक्षण के लिए नए पाठ्यक्रम के साथ नई पुस्तकों का निर्माण किया है। अभी पुस्तकों का निर्माण बुनियादी स्तर पर *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* द्वारा प्रस्तुत संस्तुतियों को ध्यान में रखकर किया गया है। अतः प्रस्तुत लेख में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रस्तुत पुस्तकों का प्रारूप तथा शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बुनियादी स्तर के शिक्षकों की, पुस्तकों के बारे में एक गहरी समझ पैदा करने के साथ-साथ पुस्तक में कौन-कौन से महत्वपूर्ण बिंदु हैं तथा पुस्तक के शिक्षण की सरल विधियों के लिए महत्वपूर्ण सुझावों पर प्रकाश डाला गया है, जो बुनियादी स्तर के शिक्षकों के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

**सह-आचार्य*, प्राथमिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016
***सहायक प्राध्यापक*, शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

बच्चों के जीवनपर्यंत विकास में प्रारंभिक वर्षों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने (5+3+3+4) पाठ्यचर्या एवं उसकी संरचना की परिकल्पना की है, जो पहले पाँच वर्षों (3–8 आयु वर्ग) पर समुचित ध्यान देती है, जिसे बुनियादी स्तर की संज्ञा दी गई है। कक्षा 1–2 भी बुनियादी स्तर का एक अभिन्न अंग है। 3–8 वर्ष के बच्चों के समग्र विकास की आधारशिला के प्रथम चरण 'बालवाटिका' से आगे बढ़ते हुए व्यक्ति का आजीवन सीखना, सामाजिक एवं भावनात्मक व्यवहार और समग्र स्वास्थ्य इसी महत्वपूर्ण आधारभूत स्तर के अंतराल में प्राप्त अनुभवों पर निर्भर करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस स्तर हेतु एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है, जो न केवल बुनियादी स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में, अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी।

बुनियादी स्तर की पाठ्यचर्या, जिसमें कक्षा 1 और 2 समाहित है, सीखने के खेल आधारित उपागम को समुचित रूप से व्याख्यायित करती है तथा उक्त पाठ्यचर्या आधारित पुस्तकों से सीखने की प्रचलित प्रणाली से अधिक सुखद खेल आधारित एवं दक्षता आधारित अधिगम प्रणाली की ओर उन्मुख करती है, जहाँ बच्चे का किसी कार्य को स्वयं करते हुए सीखना महत्वपूर्ण हो जाता है।

हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक *सारंगी 1* बच्चों की दक्षता आधारित सामग्री को सरल, रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करती है। इस पाठ्यपुस्तक को समावेशी एवं प्रगतिशील बनाने के लिए पाठों और चित्रों की प्रस्तुति के माध्यम से अनेक रूढ़ियों को तोड़ा गया है। परंपरा, संस्कृति, भाषा प्रयोगों तथा भारतीयता समेत स्थानीय संदर्भों को इस पुस्तक में परिलक्षित किया गया है। पुस्तक के बाह्य और आंतरिक दोनों ही पहलुओं पर विस्तार से अवलोकन होगा जिससे पाठकों के साथ शिक्षकगण भी इसके विविध पहलुओं की समझ बनाकर अपने विद्यार्थियों को लाभान्वित कर सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी स्तर पर बच्चों में भाषा के विकास के साथ-साथ सतत सीखने की कला, समस्या समाधान, तार्किक और रचनात्मक सोच के विकास पर भी बहुत बल दिया गया है। इस स्तर पर भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों और गतिविधियों में भारतीय परंपरा, सांस्कृतिक मूल्य, चरित्र निर्माण, नैतिकता, करुणा और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को समेकित रूप में सम्मिलित करने की भी अनुशंसा की गई है।

प्रस्तुत लेख को निम्नलिखित तीन बिंदुओं पर आधारित किया गया है—

1. *सारंगी* पाठ्यपुस्तक की विशेषता एवं स्वरूप।
2. इस पुस्तक को पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव।
3. इस पुस्तक को पढ़ाने में शिक्षकों के लिए कुछ चुनौतियाँ।

सारंगी पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ एवं स्वरूप

सारंगी पाठ्यपुस्तक, एन.सी.एफ-एफ.एस. 2022 पर आधारित है। इस पुस्तक में संवेगात्मक, भावनात्मक, गत्यात्मक, सौंदर्यबोध और समाज के सभी पहलुओं के 19 पाठ दिए गए हैं। जो अलग-अलग संदर्भों पर आधारित हैं। इनमें कुछ पाठ खेलों पर आधारित हैं, कुछ पाठ अंतर्निहित सौंदर्यबोध पर तथा कुछ सांस्कृतिक संवेदनाओं पर आधारित हैं। इस पुस्तक के पढ़ने के बाद बच्चे खेल-खेल में बहुत से सीखने के प्रतिफलों को समझ सकेंगें।

सारंगी 1 पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पाठों में इस तरह के दृष्टांत हैं, जिन्हें बच्चे अपने जीवन में भी जोड़ कर ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, जैसे— परिवार पाठ में बातचीत के लिए शीर्षक में कहा गया है कि आप अपने घर में कहाँ-कहाँ छिप सकते हैं। खेल-खेल में शीर्षक के अंतर्गत मिट्टी से 'घर-घर' खेल की चीजें बनाइए, जैसे—चूल्हा, थाली, कटोरी आदि। अब अपने मित्रों के साथ मिलकर 'घर-घर' खेलिए। इस प्रकार के कई प्रसंग पूरी पाठ्यपुस्तक में आए हैं। उन्हें खुद अपने लिए करके सीखने के लिए अवसर दिए गए हैं। बच्चे इस माध्यम से अर्जित ज्ञान से न सिर्फ सीखेंगे, बल्कि उनके ज्ञान में स्थायित्व बोध भी होगा।

पाठ्यपुस्तक के संपूर्ण पाठों में लगभग सभी प्रकार की दक्षताओं का ध्यान रखा गया है। इसके अलावा विभिन्न कार्यों में विविधता लाकर बच्चों में रोचकता लाने का संपूर्ण प्रयास किया गया है।

- पाठ्यपुस्तक *सारंगी* को पढ़ाने के लिए बच्चों के जीवन से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है जिससे यह प्रक्रिया सहज और अर्थपूर्ण हो जैसे— इकाई 1– परिवार, इसमें एक चित्र के माध्यम से उन्हें अपने परिवार तथा उनके सदस्यों की पहचान के लिए आधार प्रस्तुत किया गया है, यहाँ बच्चे चित्र को देखेंगे तथा अपने परिवार के बारे में बातचीत करेंगे। उन्हें अपने परिवार में शामिल सदस्यों का नाम भी मित्रों तथा शिक्षक के साथ चर्चा करके पता चल जाएगा। पुनः बच्चे घर जाकर उन संबंधों को घर में देखकर उनका प्रयोग लगातार करेंगे। जिससे वह उन संबंधों को स्थायी रूप दे पाएँगे। इसके अलावा *सारंगी 1*

पुस्तक में इस तरह के अन्य पाठ भी शामिल हैं, जैसे— मीना का परिवार, दादा-दादी, रीना का दिन आदि। वास्तव में रीना के दिन के साथ ही वह अपनी दिनचर्या के बारे में भी अपनी कक्षा में चर्चा कर सकते हैं।

- भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो हमें संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि विभिन्न कार्यों के लिए जितना अधिक भाषा का प्रयोग होता है, उतनी ही तेजी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अतः *सारंगी भाग 1* पुस्तक में अपनी भाषा में बातचीत करने, सुनकर कुछ करने, कहानी और कविताओं का आनंद लेने, ध्वनि और शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर दिए गए हैं, जैसे— झटपट कहिए, शब्दों का खेल, खोजें-जानें, बातचीत के लिए, खेल-खेल में, चित्रकारी और लेखन, सोचिए और बताइए, प्रश्न और पहेली, रंग भरिए, क्या होता अगर आदि शीर्षकों से विभिन्न गतिविधियाँ दी गई हैं। बच्चे आनंद लेकर इन गतिविधियों में अपने को जोड़ते हैं। विभिन्न समस्याओं के समाधान के साथ ही उतरोत्तर उनके भाषा का भी विकास होता है।
- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में बुनियादी स्तर पर भाषा विकास पर अधिक बल दिया गया है। निःसंदेह बुनियादी स्तर सीखने का महत्वपूर्ण स्तर होता है। जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों को समझने के अगले स्तर पर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस तरह पुस्तक में भाषा की संकल्पना को समझाने के लिए अधिक से अधिक दिन-प्रतिदिन के उदाहरणों को प्रस्तुत किया है।
- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में शिक्षण-अधिगम की अनुभवात्मक अधिगम विधि पर बल दिया गया है। जिसमें बच्चे अधिक से अधिक अपने स्थानीय अनुभवों से सीखें, चूँकि स्थानीय अनुभवों द्वारा सीखा जाना लंबे समय तक स्मरण रहने वाला सीखना होता है।

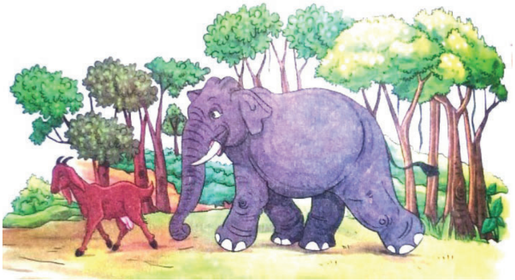

- इस पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को रखा गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं— परिवार, जीव-जगत, हमारा खान-पान, त्योहार और मेले तथा हरी-भरी दुनिया। परिवार पाठ में पूरे पृष्ठ पर परिवार का दृश्य चित्रित किया गया है। यह चित्र हमारे भारतीय संस्कृति में परिलक्षित संयुक्त परिवार को परिभाषित करता है। इस चित्र में माता-पिता, भाई-बहन के अलावा दादा एवं दादी भी हैं। चित्रों में बातचीत के लिए अनेक प्रसंग दिए गए हैं। अध्यापक बच्चों से इस बारे में चर्चा करें तथा उनसे उनके परिवार के बारे में भी पूछें। कई बार बच्चे नए-नए पारिवारिक संबंधों को भी शिक्षक की मदद से परिभाषित कर पाते हैं। इससे उनमें जिज्ञासा के साथ ही साथ तर्क का भी भावबोध

होता है। बच्चों को जीव-जगत बहुत ही प्रिय होता है वे उनसे जुड़ी कहानियाँ कविता में बहुत ही रुचि लेते हैं।

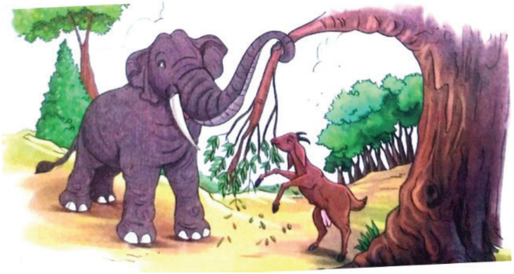

- जीवजगत के ज्ञान को और परिपुष्ट करने के लिए विभिन्न चित्र कथाओं में भी उनके चित्र उकेरे गए हैं। संदर्भ का ज्ञान देने के उपरांत शिक्षक विभिन्न चित्रों में दिख रखे पशुओं के बारे में पूछ सकते हैं। शिक्षक पशुओं का सामान्य ज्ञान कराकर उनकी विशेषताओं के बारे में भी चर्चा कर सकते हैं। बच्चों को गृहकार्य देकर उन पशुओं की विशेषताओं का ज्ञान अर्जित करने के लिए भी कहा जा सकता है। शिक्षक बच्चों को विभिन्न पशुओं का चित्र बनाकर उसमें रंग भरने के लिए भी कह सकते हैं।
- महत्वपूर्ण बात यह है कि कक्षा में बच्चों के संदर्भ की वस्तुओं/घटनाओं को वास्तविक जीवन से जोड़ा जाए जिससे बच्चे एकाकार करके संदर्भ का ज्ञान स्थायी रूप में अर्जित कर पाएँगे।

हिंदी की पाठयपुस्तक *सारंगी (कक्षा 1)* को पढ़ाने के लिए शिक्षकों के लिए सुझाव

- भाषा के शिक्षकों को, बुनियादी स्तर के बच्चों को, विषय की संकल्पना को समझना आसान होता है, यदि वह अनुभवात्मक विधि का प्रयोग करें। भाषा को अनुभवात्मक विधि से पढ़ाने पर बच्चों को भाषा रटने से छुटकारा दिलाया जा सकता है। शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाएँ।
- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने अनुभवात्मक-अधिगम विधि द्वारा भाषा सिखाने पर बल दिया है। शिक्षक को कक्षा में स्थानीय वस्तुओं और भाषा का संदर्भ लेकर कक्षा में पढ़ाना चाहिए। इससे बच्चों की कक्षा में सहभागिता और बढ़ पाएगी।
- *सारंगी* पाठ्यपुस्तक में परंपरा, संस्कृति, भाषा तथा भारतीयता समेत स्थानीय संदर्भों को भी सुंदर तरीके से परिलक्षित किया गया है, तो शिक्षकों को पुस्तक के सभी पक्षों से देखना चाहिए और फिर पुस्तक द्वारा शिक्षण कराना चाहिए।
- यदि शिक्षक कक्षा में अनुभवात्मक अधिगम विधि द्वारा शिक्षण कराते हैं तो निश्चित रूप से बच्चों में समस्या-समाधान, तार्किक और रचनात्मक सोच को विकसित किया जा सकता है।
- शिक्षकों को चाहिए कि बुनियादी स्तर पर बच्चों के दिन-प्रतिदिन मूर्त अनुभवों का अधिक से अधिक प्रयोग करके भाषा की समझ विकसित करें।
- शिक्षकों को कक्षा में बच्चों की सक्रियता को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाना चाहिए जिससे बच्चे मूर्त अनुभवों के द्वारा अमूर्त चिंतन तक पहुँच जाएँ।
- इस स्तर पर बच्चों की भाषा को रोचक बनाने के लिए बच्चों से ज्यादा से ज्यादा बात करनी चाहिए, ताकि बच्चों का संप्रेषण भी अच्छा हो पाएगा।
- भाषा को अनुभवात्मक विधि में पढ़ाने से बच्चों में भाषा के प्रति रोचकता, सृजनात्मकता और मनोरंजन के साथ पूर्ण विधि से भाषा की संकल्पना को समझने में मदद मिलती है।

- बुनियादी स्तर पर *सारंगी* पाठ्यपुस्तक को पढ़ाते समय बच्चे के घर, परिवार के अनुभवों को जोड़ना चाहिए जिससे बच्चे विषय की संकल्पना को आसानी से समझ सकें।
- बच्चों को कहानी व कविताओं को पढ़ाते समय संगीत और खेल का प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि बच्चों को खेलना ज्यादा पसंद आता है।
- कक्षा में भाषा पढ़ाते समय बच्चों को अपने भावों को व्यक्त करने हेतु अवसर प्रदान करने चाहिए जैसे चित्र बनाकर या अभिनय करके इत्यादि। इनके माध्यम से बच्चों की कल्पना, सोचने की क्षमता, विचारों, और भावों को प्रकट करना आसान हो जाता है। अत: *सारंगी* पाठ्यपुस्तक को पढ़ाते समय शिक्षकों को उपरोक्त सभी सुझावों को ध्यान में रखना चाहिए, जिससे शिक्षण को और रोचकपूर्ण बनाया जा सकता है।
- *सारंगी 1* पाठ्यपुस्तक नई है, इस पुस्तक को पढ़ाने से पूर्व शिक्षक को भी पाठ्यपुस्तक के बारे में पढ़ लेना चाहिए कि प्रत्येक पाठ को क्यों पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। उस पाठ में वर्णित दक्षताओं का ज्ञान अर्जित करने के उपरांत ही शिक्षक प्रत्येक पाठ पर विद्यार्थियों से चर्चा करें। शिक्षक बच्चों से बातचीत करें उनके द्वारा बताई बातों को ध्यानपूर्वक सुने तथा विभिन्न कार्यों के माध्यम से उन्हें नित्य नवीन जानकारियाँ अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

कक्षा 1 की हिंदी भाषा की पाठयपुस्तक *सारंगी* को पढ़ाने में शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियाँ

- विषयवस्तु को अनुभवात्मक विधि से प्रस्तुत करना शिक्षकों के सामने बड़ी चुनौती है, क्योंकि समय पर पाठ्यक्रम को समाप्त नहीं किया जा सकता है। अत: कई शिक्षकों का ऐसा ही मानना है कि अनुभवात्मक विधि से पढ़ाने में पाठ्यक्रम पूरा नहीं होता और विषय के सभी बिंदुओं को पूरा नहीं किया जा सकता है। अत: शिक्षकों के सामने अब ये चुनौती आ जाती है कि वह इस विधि का किस प्रकार प्रयोग करें।
- कभी-कभी पढ़ाते समय बच्चे विषय के उद्देश्य से भटक जाते हैं जिसका परिणाम बच्चों के समय की काफी बर्बादी हो जाती है। अत: शिक्षकों के सामने यह चुनौती खड़ी हो जाती है कि किन अनुभवों को शामिल करें और किनको नहीं इसलिए विषय से भटकाव की चुनौती बनी रहती है।
- *सांरगी* पाठ्यपुस्तक को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को निरंतर बच्चों की क्रियाओं का अवलोकन करना चाहिए तभी शिक्षक सांरगी पाठ्यपुस्तक को सही रूप में पढ़ा सकते हैं, लेकिन निरंतर अवलोकन के लिए शिक्षकों के सामने अतिरिक्त समय होना भी चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- शिक्षकों को इस स्तर पर बच्चों से सभी मुद्दों पर चर्चा करनी चाहिए और चर्चा के लिए सही मायने में शिक्षकों के पास समय भी होना चाहिए। चूँकि शिक्षक विद्यालय की कई और जिम्मेदारियों में बंधे होते हैं, इसलिए बच्चों को अतिरिक्त समय देने की स्थिति में नहीं होते। इस तरह समय भी शिक्षकों के सामने एक चुनौती बन जाता है।
- बच्चों को बातें करना बहुत पसंद आता है और यदि कक्षा में शिक्षक बच्चों से बाते करना पसंद करता है तो बच्चे वास्तविक रूप से विषय व

शिक्षकों के साथ जुड़ जाते हैं। शिक्षकों को बच्चों के स्तर पर उनके विभिन्न प्रकार के अनुभवों के साथ जुड़ना बहुत जरूरी है। इस तरह बच्चों के किन अनुभवों को शामिल करें और किनको नहीं यह समझना सरल हो जाता है। अत: अनुभवों को शामिल करना भी शिक्षकों के सामने भी चुनौती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने बुनियादी स्तर की शिक्षा को अधिक से अधिक रोचकपूर्ण बनाने के लिए भरसक प्रयास किया है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने बुनियादी स्तर पर मात्र भाषा के द्वारा शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया है। भाषा को बच्चों के सार्वभौमिक विकास का मुख्य साधन माना गया है। भाषा को रोचकपूर्ण ढंग से पढ़ाने के लिए बच्चों के दिन-प्रतिदिन के अनुभवों के द्वारा शिक्षण कराने पर काफी बल दिया गया है। *सारंगी* पाठ्यपुस्तक में चित्रों व पाठों को सारगर्भित तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में भारत की संस्कृति, परंपरा, भाषा और स्थानीय संदर्भों पर बल दिया गया है। इस तरह बुनियादी स्तर पर बच्चों के अनुभवात्मक विधि से पढ़ाना चाहिए जिससे कि बच्चों की भाषा को समझ के अच्छे से विकसित किया जा सके।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2022*. राष्ट्रीय शिक्षा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. *सारंगी भाग 1*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति. 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.